निर्माण तीन शिला– फलकों से हुआ है। पार्श्व के स्तम्भों पर निचले भाग में मकरारूढ़ गंगा एवं कच्छपारूढ़ यमुना का सजीव अंकन है। इसके ऊपरी स्तम्भ पर प्रेमाभिनय करते हुए शयन मुद्रा में अनुरक्त दम्पतियों का सुन्दर एवं संजीव अंकन है । ललाट बिम्ब पर कमलासन गजलक्ष्मी की सर्वाधिक सुन्दर मूर्ति अंकित है। मूर्ति गुप्तकालीन सिक्कों पर उत्कीर्ण लक्ष्मी मूर्ति के सदृश्य है। यह मूर्ति प्रतिमा विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस प्रवेश द्वार को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रवेशद्वार नचना के वैष्णव मन्दिर से सम्बद्ध होगा, नचना से प्राप्त बहुसंख्यक वैष्णव मूर्तियां भी इस तथ्य का समर्थन करती हैं।

तलीय मठ

चौमुखनाथ मन्दिर से कुछ ही दूरी तथा लगभग 9.15 मी. की ऊंचाई पर यह मन्दिर स्थित है। यह भी शिव मन्दिर है। इसके स्तम्भ एवं प्रवेश द्वार इसके गुप्तकालीन होने का परिचय देते हैं। इस मन्दिर में प्रवेश तीन ओर से है। प्रवेश के पार्श्व द्वारों में एक मिथुन दम्पति लालित्य मुद्रा में है। दूसरे द्वार में मुखाकृतियां द्वार के ऊपर उत्कीर्ण जिनकी संख्या लगभग 24 है। इसी ओर नृसिंह व वाराह अवतारों की दुर्लभ एवं प्रतिमा विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण मूतियां हैं।

जैन मन्दिर

नचना विविध सम्प्रदायों का समन्वय स्थल था। यहां पर जैन मन्दिर भी है। रूपनी के धर के नाम से ज्ञात भवन वास्तव में पूर्व जैन मन्दिर रहा होगा। यहां पर अभी भी जैन तीर्थकरों की कायोत्सर्ग मुद्रा में मूर्तियां है। इसके स्तम्भों के अलंकृत अवशेष गुप्तकालीन वास्तु की परम्परा का निर्वाह करते हैं। इसका बाह्य परिवेश मध्यकालीन शिल्प का उदाहरण है। इसके साथ ही साथ नचना में अन्य जैन मन्दिरों के अवशेष विद्यमान हैं जो ध्वस्त अवस्था में हैं।

रामायण के दृश्य

चर्तुमुख महादेव मन्दिर के पृष्ठ भाग में तथा संग्रहालय के सामने जहाँ मूर्तियों का संग्रह है, उनमें भितियों पर रामायण के अनेक दृश्य अंकित हैं। इनमें प्रमुख दृश्य रावण का भिक्षाटन, वानरों के मध्य राम और लक्ष्मण, समुद्र को प्रताड़ना एवं सेतुबन्धन के दृश्यों का अंकन है। ये दृश्य गुप्तकालीन है। भारतीय कला में सबसे पहले रामायण दृश्य नचना में ही बनाये गये थे।

संगीत दृश्य

नचना की कलाकृतियों में संगीत के कुछ बड़े ही मनोहरी दृश्य हैं। इनमें संग्रहालय में संग्रहीत एक दम्पति की संगीत साधना का बड़ा ही सुन्दर दृश्य है। इसमें पुरूष वीणा वादन करते हुए तथा उसकी सहधर्मिणी मंजीरा बजाते हुए उत्कीर्ण है, ये दृश्य बड़ा ही मनोहारी है। इसी प्रकार एक अन्य दृश्य में बांसुरीवादक पुरूष व मंजीरा बजाती हुई स्त्री का दृश्य उत्कीर्ण है। इनमें संगीत की तन्मयता का अंकन बड़ा ही सौष्ठवपूर्ण है।

लखूराबाग

नचना के पुरावशेषों में लखूरा बाग का अपना विशिष्ट महत्व है। ऐसा कहा जाता है कि यहां पर किसी राजा ने एक लाख आम के वृक्ष लगवाए थे तथा एक लाख ब्राह्मणों को भोज दिया था। ऐसी किंवदन्ती है कि यहां पर असंख्य सम्पदा है, इस कारण से अनेक स्थानों पर धन के प्रलोभन में लोगों के द्वारा प्राचीन अवशेषों को विनष्ट किया गया है। यहां पर प्राचीन भवनों, प्राकारों, एवं द्वारों के अवशेष मिलते हैं जिससे लगता है कि यह क्षेत्र दुर्गीकृत रहा होगा। वास्तु शिल्प चन्देलकालीन है। यहां पर एक सुरंग भी बतलायी जाती है जो कुछ लोगों के अनुसार गुड़नी नदी तक जाती है तथा कुछ के अनुसार सतना नदी से मिलती है। इस प्रकार से सुरक्षा प्रावधानों एवं परिखा का समावेश यहां पर रहा होगा।

नचना और उसके निकटवर्ती अवशेषों के सर्वेक्षण से नाग, वाकाटक–गुप्त, प्रतिहार एवं चंदेलकालीन इतिहास की महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त होती है। कलात्मक दृष्टि से शिल्प के युगीन विकास का सम्यक् अध्ययन नचना के प्राचीन अवशेषां के माध्यम से साध्य है। प्रतिमा विज्ञान एवं मन्दिर वास्तु का क्रमिक विकास भी नचना के शिल्प में दृष्टिगत होता है। नचना के पुरावशेषों में शैव, वैष्णव और जैन संप्रदायों का धार्मिक समन्वय दृष्टिगत होता है। इसके साथ ही साथ तत्कालीन जीवन व जगत की झलक भी प्राप्त होती है ।

अधीक्षण पुरातत्वविद्

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,
भोपाल मण्डल, जी.टी.बी. काम्पलेक्स, बी–ब्लॉक
द्वितीय तल, टी.टी. नगर, भोपाल – 462003
फोन नं.: 0755-2558250, 2558270 टेलीफेक्स : 0755-2558250
ईमेल : circlebho@gmail.com वेबसाइट : www.asi.nic.in

आलेख : डॉ. एस.के. सुल्लेरे, सेवानिवृत-विभागाध्यक्ष
प्रा.भा.इ.सं. एवं पुरातत्व अध्ययन शाला
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

नचना कुठारा के पुरावशेष

पन्ना जिले का प्रसिद्ध पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक स्थल

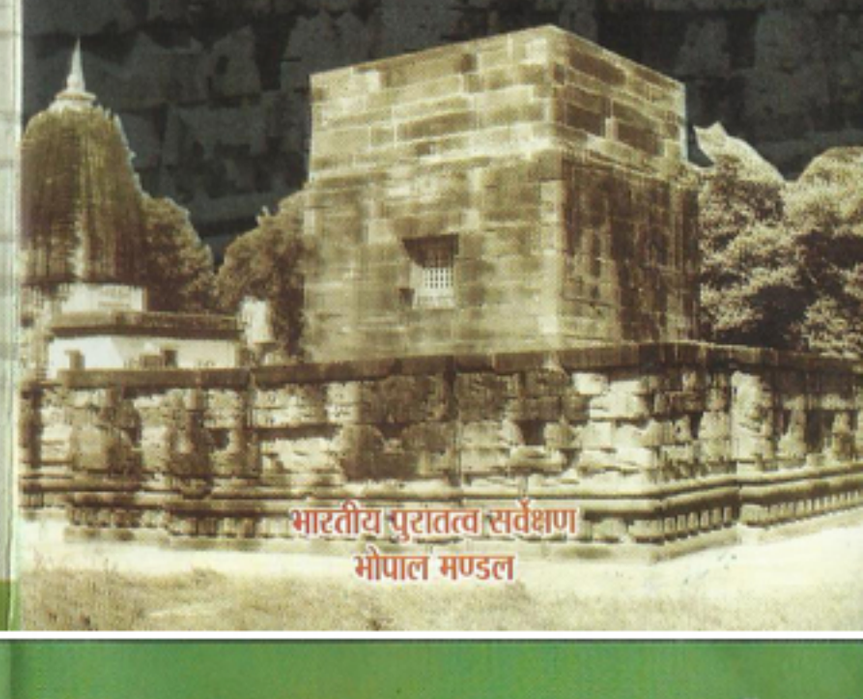

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
भोपाल मण्डल

नचना-कुठारा के पुरावशेष

नचना : कुठारा मध्यप्रदेश के पन्ना जिले में पन्ना से दक्षिण–पूर्व में 55 कि.मी. की दूरी पर तथा नागौद (सतना जिला) से 37 कि. मी. की दूरी पर दक्षिण–पश्चिम में स्थित है। यह स्थान भूतपूर्व अजयगढ़ रियासत की दक्षिणी सीमा पर स्थित है। नचना–कुठारा पहुँचने के लिए पन्ना से देवेन्द्र नगर होकर और सतना से नागौद होकर बस से गंज पहुंचा जा सकता है। गंज से नचना–कुठारा लगभग 5 कि.मी. है। गंज से नचना–कुठारा के मध्य का रास्ता ईंट के टुकड़ों और भवनों के अवशेष से परिपूर्ण है। नचना एक छोटा सा ग्राम है।

प्राचीनकाल में नचना राजनीतिक, सांस्कृतिक धार्मिक, एवं व्यापारिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण नगर था। एक प्रमुख राजनीतिक केन्द्र होने के साथ ही व्यापारिक मार्ग पर स्थित होने के कारण अपरिमित सम्पदा एवं वैभव स्वभावतः ही खिंचे चले आते थे। इस वैभव के प्रतीक मन्दिर पुष्करणियां एवं दुर्ग है। परवर्तीकाल में अनेक कारणों से ये धराशायी हो गये और उनके अवशेष उन्नत टीलों के गर्भ में छिपे पड़े हैं, किन्तु स्मारक आज भी जीर्ण–शीर्ण अवस्था में विद्यमान है जो नचना की पुरातन समृद्धि का स्मरण कराते हैं। नचना वाकाटक– गुप्तकाल से लेकर मध्यकाल तक एक समृद्ध नगर रहा होगा। इसका ज्ञान यहां के टीलों और मंदिरों के विद्यमान ध्वस्त पुरावशेष कराते हैं। नचना से वाकाटक नरेश पृथ्वीषेण के सामन्त व्याघ्रदेव का महत्वपूर्ण अभिलेख प्राप्त हुआ है।

नचना के पुरावेशेषों का सर्वप्रथम विवरण कर्निंधम ने प्रस्तुत किया था । इसके पूर्व तक विद्धत जगत इसके ऐतिहासिक महत्व से अपरिचित था। स्वयं कर्निंधम भी इस स्थान से परिचित नहीं था। इसके सम्बन्ध में उनको जानकारी तत्कालीन अजयगढ़ रियासत के शासक ने दी थी।

नचना के पुरावशेषों में मंदिरों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय मंदिर वास्तु के विकास में उनकी विशिष्ठ भूमिका है। नचना के अधिकांश मंदिर शैव सम्प्रदाय से सम्बद्ध है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि नचना वाकाटक– गुप्त एवं परवर्तीकाल में शैव मन्दिरों का केन्द्र था। उनका विवरण इस प्रकार से है:–

पार्वती मन्दिर

नचना के पार्वती मन्दिर को कर्निंधम ने एक विलक्षण एवं रोचक मन्दिर की संज्ञा प्रदान की है। विलक्षणता इसकी पारम्परिक शैल–कला की अनुकृति में है तथा रोचकता शैलोत्खात मन्दिरों की पुरातन शैली के संरक्षण में है। कर्निंधम ने इस मन्दिर का नाम–करण पार्वती–मन्दिर के नाम से किया है। राखालदास बैनर्जी इसको शिव–मन्दिर की संज्ञा देते हैं। मन्दिर के स्थलीय अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस मन्दिर को शिव–मन्दिर कहना अधिक उपयुक्त है, क्योंकि इसके सिरदल पर शिव–पार्वती का अंकन है। यह द्वितल युक्त एक सुरक्षित मन्दिर है। इसका गर्भगृह अन्दर से 1.52 मी. तथा बाहर से 4.27 मी. वर्गाकार है। प्रदक्षिणा पथ अन्दर से 7 मी. व बाहर से 10 मी. है इसके सामने का मंडप 7 मी. लंबा और 3.66 मी. चौड़ा है। मण्डप तक पहुंचने के लिये सौपानों की व्यवस्था है। गर्भगृह में प्रकाश निर्गम के लिये पार्श्व में भित्तियों में एक–एक झंझरी है। मन्दिर के प्रथम तल का प्रवेश द्वार अत्यधिक सुसज्जित है। द्वार–स्तम्भों पर प्रेमानुरत मिथुन है, जिनके अन्त में मकरवाहिनी गंगा एवं कच्छपवाहिनी यमुना है। मूर्तियाँ गुप्तकालीन हैं तथा भंगिमाओं और रूप विन्यास में अतीव सुन्दर है। यह मन्दिर–वास्तु के विकास में अपना विशिष्ट स्थान रखता है ।

चर्तुमुख महादेव मन्दिर

नचना का चर्तुमुख महादेव मन्दिर आकृति और विन्यास में पार्वती मन्दिर से सर्वथा भिन्न है। स्थानीय लोगों के द्वारा चौमुखनाथ के नाम से जाना जाता है तथा सर्वाधिक आकर्षण और श्रद्धा का स्थल है। यह एक उच्च अधिष्ठान पर निर्मित वर्गाकार मन्दिर है। इसके गर्भगृह के ऊपर पंचरथ प्रकार का शिखर है। शिखर कोणों पर लघु–वक्रता लिए हुए लगभग 12.20 मी. ऊंचा है। इस मन्दिर के आन्तरिक भाग में जल वातायनों द्वारा प्रकाश की व्यवस्था की गयी है। गर्भगृह में 1.22 मी. ऊँची अत्यधिक प्रभावशाली चर्तुमुख शिवलिंग मूर्ति है, जो अपने चर्तुमुखों पर लोकोतर भावाभिव्यक्ति के लिए प्रख्यात है। इस मूर्ति का दक्षिणाभिमुख रौद्र रूप वाला है, इसमें शिव के विषपायी रूप का अंकन है। पूर्व अथवा सामने का मुख स्मित तथा क्षीण दन्त दर्शन युक्त है और त्रिनेत्र वाला है और जटामुकुट पर चन्द्रमां का अंकन है। इसमें शिव के कामान्तक रूप का अंकन है। शेष दो मुख सौम्य रूप का द्योतन करते हैं। भारतीय कला की मुखलिंग प्रतिमाओं का इसमें चरमोत्कर्ष एवं सर्वोत्कृष्ट रूप दृष्टिगत होता है, इसके निर्माण में तक्षक ने अपनी सर्वोत्कृष्ट कला का परिचय दिया है। वाहय भाग के दिक् बिन्दुओं पर जाल– वातायनों पर ताखों के जोड़ हैं, जिनमें विद्याधरों के युग्म हैं। ताखों पर त्रिकोणिका ढालू चैत्य है। मन्दिर की भिति के प्रत्येक कोण की पुष्त पर ताख हैं, जिनमें दिक्पालों की मूर्तियां हैं। इस मन्दिर का शिखर पांच तलों का विकसित छिद्रयुक्त चैत्याकार अलंकरणों से युक्त है। इस मन्दिर के सभी पुष्त प्रक्षेपण शिखर के मध्य भाग के परे है, जो भारी आमलक से आच्छादित है, जबकि मन्दिर के वातायनों एवं प्रवेश द्वारों पर वामनों, कुण्डलित वल्लरियों, गंगा–यमुना की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं और द्वार की ऊपरी सज्जा गुप्तकालीन कला परम्परा का निर्वाह करती है। इसके बन्धनों और शिखर की रचना में, दिक्पालों के नियमन में तथा अलंकरणात्मक वास्तुपरक अभिप्राय जैसे त्रिकोणिका, हृदयाकार पुष्प, वर्गाकार कड़ी छोर तथा व्याघ्रमुखों के अंकन में नवीं शताब्दी की विकसित प्रतिहार शैली की विशेषताओं का प्रभाव दृष्टिगत होता है। कर्निंधम इस मन्दिर का निर्माण काल 600–700 ई. का निर्धारित करते हैं।

रूपनी का मन्दिर

रूपनी का शिव मन्दिर चौमुखनाथ से कुछ दूरी पर स्थित है। इस मन्दिर के बारे में स्थानीय किंवदन्ती है कि इस मन्दिर में ऊदल की प्रेमिका शिव–दर्शन के हेतु आती थी, इसी के नाम से इस मन्दिर का नाम रूपनी का मन्दिर पड़ गया। यह मन्दिर अपने बाह्य आकार में मध्ययुगीन है, लेकिन इसके आन्तरिक भाग में जहां पर शिवलिंग स्थापित है, उसका प्रवेश द्वार अतीव सुन्दर एवं गुप्तकालीन है। इसका